महाराष्ट्रके भीमगीत :– उद्देश, स्वरूप तथा विकास

डॉ. अनया थत्ते
सहाय्यक प्राध्यापिका, संगीत विभाग, मुंबई विद्यापीठ.
anaya_thatte@yahoo.co.in

कुछ महत्वपूर्ण षब्द

- **संगीत , बहुजन समाज, भीमगीत, आंबेडकरी जलसा, अभिजात संगीत, व्यावयायिक संगीत**

प्रस्तावना

गीतम वाद्यम तथा नृत्य त्रयम संगीतम उच्यते संगीत की यह परिभाषा सर्वमान्य है। संगीत की उत्पत्ति के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि संगीत की उत्पत्ति सामवेद से हुई है। इसका प्रमाण हमें सभी प्राचीन और मध्यकालीन ग्रंथों में मिलता है। ऋग्वेद पहला ऐसा वेद था, जिसमें मंत्रों के उच्चारण के लिए उदत्त, अनुदत्त और स्वरित इन तीन स्वरों का उल्लेख मिलता है। सामवेद ऋग्वेद के गेय मंत्रों का संकलन है। साम का अर्थ गायन है, इसीलिए सामवेद एक गेय वेद है, जिसमें वेद मन्त्रों को लयबद्ध तरीके से गाया जाता है। आरती, स्तोत्र, ध्रुवगीत, जाति आदि का विकास बाद में सामवेद से हुआ। इस प्रकार निश्चित उच्चारण प्रणाली और विश्राम प्रणाली के कारण संगीत की कला का विकास हुआ, जिसे विशेष प्रशिक्षण, अभ्यास और विशेष वातावरण में पूरा करना संभव था। इसे मार्ग संगीत, शिष्ट संगीत, रागदारी संगीत, गंधर्व गीत आदि नामों से जाना जाता था।

भारतीय संस्कृति में संगीत का सर्वोच्च स्थान है। घर–घर के दैनिक आचार–विचार आदि में भी संगीत का स्थान महत्वपूर्ण माना गया है। पौराणिक, ऐतिहासिक और

सामाजिक रीति–रिवाज भी संगीत के माध्यम से पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित किए जाते हैं। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मुख्य रूप से दो प्रकार के संगीत का उल्लेख मिलता है, मार्ग और देशी। कलीनाथ के अनुसार इसका दूसरा नाम गंधर्व है। इस प्रकार का गायन, वादन और नृत्य जो लोगों का मनोरंजन करता है और जो आम जनता की रुचि के अनुसार होता है, उसे देशी संगीत कहा जाता है। मार्गी संगीत वह संगीत है जो पारंपरिक नियमों और परंपराओं द्वारा एक निश्चित और निश्चित दिशा में चलता है। यह एक स्वतंत्र कला के रूप में लोकप्रिय संगीत है, जिसकी विशेषता ध्वनि माधुर्य है, जबकि देशी संगीत कविता, नाटक आदि के उपांग के रूप में है, जिसमें शब्द, हावभाव, तात्कालिक स्थिति आदि का बहुत प्रभाव है। . वस्तुतः यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि हमारा आज का रागदारी संगीत मार्गी संगीत ही है। देवी–देवताओं के स्तोत्र, आरती, भजन, पौराणिक व्यक्तित्वों के पात्र, रामायण, महाभारत आदि की कथाएं क्षेत्रीय भाषाओं में लोक परंपरा के माध्यम से देखने को मिलती हैं। इन दोनों धाराओं के विकास में परम्परा का असाधारण महत्व है। लोक परंपरा जो देशी संगीत से परे थी, एक अलग तरीके से विकसित हुई, जिसमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों की सामाजिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण प्रभाव दिखा। आधुनिक युग तक इस परम्परा में अनेक परिवर्तन हुए, पर लोक संस्कृति की यह धारा अविरल रही।

संगीत मानव के मन में स्थित विभिन्न मनोंभावोंकी अभिव्यक्ति है। कहा जाता है, कि जो परिणाम एक भाषण द्वारा साध्य होता है, वह केवल एक गीत के माध्यम से भी अधिक प्रभावकारी हो सकता है। यही कारण है, कि स्वतंत्रता संग्राम के समय समरगीत नामक गीतप्रकार की निर्मिती हुई, जिनके द्वारा समाजमन में राष्ट्रभक्ति जागृत करने के प्रयास किए गए। संगीत के स्वरोंमें मानवी मन को आकर्षित करने की क्षमता नित्य ही रही है। मानसशास्त्र में भी आज संगीत चिकित्सा के अंतर्गत विविध व्याधियोंके

निर्मूलन के लिए अलग अलग प्रकार के संगीत के उपयोजन द्वारा प्रयोग किए जा रहे है। संगीत में स्वर एवं लय के उचित प्रयोग से अनेक भावोंकी उत्पत्ती होती है, जो व्यक्ति के मनोभावोंको प्रेरित करती है। यही कारण है, कि मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यू तक की विविध अवस्थाओंमें संगीत का अस्तित्व निरंतर बना रहा है। मनुष्य व्यवहार के भावात्मक पहलू को क्रियात्मक रूप से व्यक्त करने का संगीत एक सशक्त माध्यम है। [1]

संगीत के विभिन्न प्रकार

प्रख्यात संगीतज्ञ डॉ. अशोक रानडे जी के मतानुसार संगीत के विभिन्न प्रकार इसप्रकार है।[2]

आदीम संगीत – आदीम मानवसमूहोंका संगीत, जिससे संस्कृति के प्राथमिक स्वरूप का दर्शन होता है। इसमें कोई भी तंत्र अथवा रूप नहीं होता है।

नागर संगीत अथवा लौकिक संगीत – इन दोनोंका स्वरूप एकसमान ही प्रतीत होता है। संस्कृति के विकास के साथ यांत्रिकीकरण, अलग अलग जातियाँ तथा भाषाओंके लोग जब अपने अपने संस्कारोंके साथ समाज में एकसाथ रहते हैं, तब उनकी संस्कृतियोंका एकदूसरे पर असर पडता है। इन सबका वंशगत संगीत अलग अलग होते हुए भी उनकी सांगितिक प्रतिक्रियाऐं समान होती है। उदा. लोकल ट्रेन में यात्रा करनेवाली भजन मंडलियां, चुनाव के समय राजकीय पक्षोंद्वारा प्रचार प्रसार हेतु गाए जानेवाले गीत इ. इसी को नागरी संगीत भी कहा जाता है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में महाराष्ट्रमें जो भी आंदोलन हुए, उस समय रचे गऐ सभी गीतोंका समावेश नागरी संगीत के अंतर्गत होता है। समाज की सांगितिक अभिरूची में होनेवाले बदलावोंके

[1] कुलकर्णी डॉ. वसुधा, भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान, पृ. 87
[2] रानडे, डॉ. अशोक, लोकसंगीतशास्त्र, ज. रा.बर्दापूरकर, औरंगाबाद, 1975

अनुसार नागर संगीत अथवा लौकिक संगीत के स्वरूप में भी परिवर्तन होता है। इनमें एक सूक्ष्म भेद यह बताया जा सकता है, कि नागरी संगीत से स्फूर्ती लेकर जब व्यावसायिक दृष्टिकोण से परंपरा में आकर्षक बदलाव लाकर जब संगीतकार सोशलमिडीया के माध्यम से उसे लोकप्रिय करता है, तब उसे लौकिक संगीत कहा जाता है। सिनेसंगीत का समावेश इस श्रेणि में किया जा सकता है। कभी कभी लोकसंगीत और लौकिक संगीत के अंतर्गत आदान प्रदान भी दिखाई देता है। संगीत के विविध प्रकारोंकी पार्श्वभूमि को समझने के उपरांत भीमगीतोंकी श्रेणि तथा स्वरूप को समझना सुलभ रहेगा।

बोधिसत्व, भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजीद्वारा पुरस्कृत भारतीय राज्यघटना हम भारतवर्ष के सभी नागरिकोंके लिए एक अमूल्य दस्तावेज है। उनके सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजकीय, न्याय, मानसशास्त्र, धर्मसंबंधी विचारोंकी चर्चा अलग अलग मंचोंपर नित्य ही होती है। इस नाते से वह एक लोकप्रिय विचारवंत, समाजशास्त्रज्ञ, अर्थतज्ञ, राज्यशास्त्रज्ञ, कायदेपंडित थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में स्त्री तथा दलित समाज के उत्थापन के लिए चवदार तळयाचा सत्याग्रह, मनुस्मृति दहन, काळाराम मंदिर सत्याग्रह, स्वतंत्र मजदूर पक्ष, मजदूर आंदोलन, हिंदू कोड बिल आदि कईं आंदोलन किए जिनसे समाज में अभूतपूर्व क्रांति हुई। तत्कालीन चातुर्वणिय समाजव्यवस्था को पूर्णतः बदलने हेतु स्वातंत्र्य, समता तथा बंधुभाव का पुरस्कार किया। एक सामाजिक मूल्य के रूप में स्त्री शिक्षा का पुरस्कार किया। समाज में मानवतावादी मूल्योंके रूप में स्वातंत्र्य, समता, बंधुता तथा न्याय आदि का प्रसार किया। उन्होंने समाज में प्रचलित कुरीतियोंको समाप्त कर नए समाज की निर्मिती की। आपके कार्य का वर्णन करना यानि गागर में सागर भरने के प्रयास जैसा है। तथागत बुध्द, संत कबीर तथा महात्मा

ज्योतिबा फुलेजी को आपके लिए सदैव ही गुरूस्थान पर रहें। उन्हीं के पदचिन्होंपर आपने मार्गक्रमण किया।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर पर बचपन से ही संगीत के भी संस्कार थे। यह उन्हें अपने पिता श्री. रामजी सुभेदार जो कबीरपंथी थे, उनसे प्राप्त हुए। कबीर के दोहोंपर उन्होंने विशेष अभ्यास कर अपने अनुयायी जन को उनके तथा भगवान बुध्द के विचारोंकी विरासत प्रदान की। संगीत के माध्यम से भी सामाजिक, राजकीय, धार्मिक तथा वैचारिक परिवर्तन होना संभव है ऐसा उनका मानना था। बाबासाहेब तालवाद्य तथा तंतुवाद्य वादन कला में निपुण थे। वह एक अच्छे वायलीन वादक थे। इसप्रकार संगीत में उन्हें रूचि थी। अपने भाषण में उनके द्वारा रखे गए विचारोंका प्रचार प्रसार तत्कालीन शाहीर, कवि तथा गायक गीत, तथा जलसोंके माध्यम से समाज में करते थे। मेरी दस सभाओंकी बराबरी शाहीर कर्डक जी के एक जलसे के बराबर है, ऐसा स्वयं आंबेडकरजी ने वादळाचे वंशज में लिखा है। इन सभी शाहीर, कवि तथा कलाकारोंने बाबासाहब के विचार अपनी गायन प्रस्तुति द्वारा छोटे से छोटे गाँव तक पहुंचाए। उनकी मृत्यू के पश्चात भी उनके विचारोंको भीमगीतों के माध्यम से जागृत रखा गया।

भीमगीत यह विषय दलित समाज के लिए अत्यंत अभिमान का विषय है। महाराष्ट्र के अलग अलग जिल्होंमें बसे दलित समाज के हृदय में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। दलित समाज के मन में उनके लिए आदरभाव इतना उच्च कोटि का है, कि उन्हें वे अपना भगवान ही मानते है। उन्हीं के सामने नतमस्तक होकर उनके दिन की शुरूवात होती है। केवल इतनाही नहीं, अपने जीवन का हर महत्वपूर्ण काम भी वह उन्हीं के साक्षीभाव से संपन्न करते है। जिस प्रकार किसी भगवान की पूजा अर्चना सांगितिक पदोंसे अथवा भक्तिसंगीत से संपन्न होती

है, उसी प्रकार दलित समाज में, विशेषरूपसे महार समाज में भीमगीतोंद्वारा महाराष्ट्रमें आदरांजलि दी जाती है। इस समाज के बालकोंपर बचपन से ही भीमगीतोंके संस्कार जाने अनजानेमें होते रहते है। भीमगीत गाकर तथा सुनकर ही यह बालक बडे होते है, जीवन में आनेवाले सुख दुख के सभी प्रसंगोंमें यह गीत उन्हे जीने के प्रेरणा देते है। नई पीढी को बाबासाहब आंबेडकरजी द्वारा किए गए अतुलनीय कार्य की पहचान कराने हेतु यह गीत महत्वपूर्ण भूमिका निभातें है। समाज में प्रचलित अलग अलग रूढीयोंके विरोध में आवाज उठाने हेतु भीमगीतोंकी रचना होती है। कईं बार जलसोंके माध्यम से सामूहिक रूप में भीमगीत प्रस्तुत किए जाते है। यह कार्यक्रम आंबेडकरी जलसा इस नाम से प्रसिध्द है। इनका स्वरूप सामूहिक होने के कारण लोकसंगीत से मिलता जुलता है। यही कारण है, कि महाराष्ट्र के अकोला, अमरावती, औरंगाबाद इ. जिल्होंमें भीमगीतोंको लोकसंगीत के अंतर्गत रखा जाता है। आज भारतीय समाजजीवन में भीमगीतोंको महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है, तथा यह गीत जनप्रिय संगीत के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण श्रेणि के रूप में अपना स्थान बना रहें है। वर्तमान में इन गीतोंका क्षेत्र विशिष्ट समाज तक मर्यादित नहीं रहा है। इनके प्रचार प्रसार में समाज के सभी स्तरोंके कलाकारोंका योगदान दिखाई देता है।

संगीत, साहित्य तथा समाज इन तीनों घटकोंका परस्पर संबंध सर्वमान्य है। समाज में विविध कालखंडोंमें होनवाले परिवर्तन के साथ ही वहां के साहित्य तथा संगीत में भी बदलाव आते है। प्रस्तुत शोधपत्र में भीमगीतोंके इन्हीं सामाजिक, साहित्यिक तथा सांगितिक मूल्योंका एकत्रित अभ्यास करने का प्रयास किया गया है।

भीमगीत :– संकल्पना, संस्कृति तथा विकास

दीन दलित, श्रमिक, शोषितोंके उद्धारक डॉ. बाबासाहब आंबेडकरजी ने सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, धार्मिक, पत्रकारिता, कायदा, शैक्षिक आदि सभी क्षेत्रोंमें महत्वपूर्ण

योगदान देकर भारतीय समाजव्यवस्था को बलवान करने का प्रयास किया। श्रामिक, विस्थापित, महिला, किसान, तथा मजदूर वर्ग को अपने अधिकारोंके प्रति जाग्रत किया। प्रज्ञा, शील, तथा करूणा इस त्रिसरण का पुरस्कार किया। समाज के निम्न वर्ग के उपेक्षितोंको जातिवाद के विरोध में आवाज उठाने की हिम्मत दी। इस महामानव ने शिक्षा, संघटन तथा धम्मचक्रप्रवर्तन की सहाय्यतासे हजारों वर्षोंतक अस्पृश्यता की खाई में पडे लाखों दीन दलितोंका पुनरूत्थान किया। उनके महापरिनिर्वाण के पश्चात उनका कार्य लोगोंतक पहुंचाने तथा आनेवाली पीढी को बाबासाहब आंबेडकरजी के विचारोंसे अवगत कराने हेतू दलित समाज में भीमगीतों का गायन किया जाता है।

भीमगीतोंका विकास दलित बस्तीयोंमें मौखिक परंपरा से हुआ। इन बस्तीयोंमें बचपन से ही बच्चोंपर भीमगीतोंके संस्कार होते है। घर का काम करते हुए यहांकी महिलाऐं ओवी, पालना (झूला) गाती है, जो बाबासाहब के जीवनकार्य पर आधारित होते है। इसीप्रकार पुरूषोंद्वारा आंबेडकरजी की जयंती, पुण्यतिथी के कार्यक्रम, धम्मपरिवर्तन दिन, बुध्दपौर्णिमा आदि अवसरोंपर सामूहिक तथा एकल रूप में भीमगीतों के कार्यक्रमोंकी प्रस्तुति होती है। इनमें गायक तथा वादक भी अधिकतर इसी समाज के होते है। अपने परमप्रिय दैवत को भावपूर्ण आदरांजलि देने के लिए दलित समाज के सभी लोग इन अवसरोंपर एकत्रित होते है। इन बस्तीयोंमें बसे बौध्दविहारोंमें भी समय समय पर महिलाऐं तथा पुरूषोंद्वारा भीमगीत तथा बुध्दगीतोंकी प्रस्तुति होती है।

भीमगीतोंके सामाजिक संदर्भ

गत चार पाँच दशकोंसे महाराष्ट्र में भीमगीतोंको विशेष रूप से विकास हुआ दिखाई देता है। इस अवधि में सैंकडों भीमगीतोंकी निर्मिती महाराष्ट्र में हुई। इन भीमगीतोंके विषयोंमें भी विविधता दिखाई देती है। सभी गीत आंबेडकरजी के व्यक्तित्व

तथा कार्य से संबंधित है। कुछ गीतोंमें दलित समाज पर विविध कालखंडोंमे उच्चवर्णियोंद्वारा किए गए अन्याय का वर्णन है, तो कुछ गीत इस अन्याय के विरोध में आवाज उठाने के लिए अस्त्र के रूप में लिखे गऐ पाए जातें है। हर एक भीमगीत को प्रखर सामाजिक संदर्भ प्राप्त है। इन गीतोंद्वारा तत्कालीन समाजव्यवस्थामें हुए दलितोंके शोषण पर कडी टीका की गयी है। समाज में लाखों निष्ठावान भीमसैनिकोंकी फौज निर्माण करनेमें भीमगीतोंका बहुमूल्य योगदान है। पारंपारिक रूप से दलित समाज में भीमगीतोंकी प्रस्तुति मनोरंजन से अधिक सामाजिक आंदोलन के रूप में दिखाई देती है। यह गीत दलित संस्कृति का भी प्रतिनिधित्व करतें है।

भीमगीतोंका साहित्य

डॉ. बाबासाहब आंबेडकरजी के जीवन से जुडी अनेक घटनाऐ हमें भीमगीतोंके साहित्य के रूप में प्राप्त होती है। भीमगीतोंके शुरूआती दौर में व्यक्तिपूजन, संवेदना प्रकटीकरण, संकल्पना प्रकटीकरण, वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था, समता, बंधुता, संघ आदि विषयोंका समावेश होता था। परंतु समकालीन भीमगीतोंमें इन्हीं के साथ एक व्यापक विचार भी प्रस्तुत किया गया है। आज के भीमगीतेांमें उनके द्वारा रखे गए विचारोंको आगे बढाने की बात होती है। यह गीत स्वातंत्र्य, समता, विषमता, एकीकरण, शिक्षा, लिंग तथा जातिय समानता, महिला सशक्तीकरण, अहिंसा, मानवतावाद, स्वाभिमान तथा स्वावलंबन आदि बातोंका पुरस्कार करते है।[3]

परंपारिक भीमगीतों के साथ ही दलित समाज के हर एक कवि द्वारा उनकी सृजनशीलता तथा काव्यप्रतिभा के आधार पर साहित्यनिर्मिती हो रही है। अपनी कविता के माध्यम से अपने आराध्य को भावपुष्पांजलि अर्पित करने की उनकी आकांक्षा इन

[3] Dr. Sanjay Mohod, Head, Department of Music BAMU, Aurangaabad,interview dated May 18, 202.

कविताओंद्वारा सफल हो रही है। इन काव्योंका गायन कविसंमेलन के अवसर पर किया जाता है, परंतु यह प्रस्तुति वैयक्तिक स्तर पर होती है, जिसमें कवि स्वयं ही अपनी कविता को सांगितिक रूपमें प्रस्तुत करता है। तथा काव्य का आशय पूर्ण रूप से श्रोताओंतक पहुंचान यही इस काव्यगायन का मुख्य हेतु होता है।

काव्यगायन में प्रस्तुत कविताओंकी धुन भी सरल होती है। मात्र आधुनिक युग के भीमगीतोंके कार्यक्रमोंमें जो भीमगीत प्रस्तुत किए जाते है, उनके काव्य सांगितिक प्रस्तुती के निकषोंकी पूर्तता करतें है। इन काव्येांको किसी संगीतकार द्वारा स्वरबध्द कर व्यावयायिक कलाकारोंद्वारा उनकी प्रस्तुति होती है। आंबेडकर जयंती, पुण्यतिथी, बुध्द पौर्णिमा तथा धम्मचक्र प्रवर्तन दिन के अवसर पर आयोजित सैंकडों कार्यक्रमोंके अवसर पर हर साल नए भीमगीतोंकी निर्मिती होती है। भीमगीतोंपर साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, तथा सांगितिक दृष्टिकोण से यह अभ्यास इसी कारण संशोधन के क्षेत्र में अपना महत्व रखता है।

जीवन में संगीतका महत्व तथा भीमगीतोंमें निहित संगीत

संगीत कला को मनुष्य की भावनाओंके आविष्कार के माध्यम के रूप में वैश्विक स्तर पर स्विकारा गया है। संगीत कला किसी भी विशिष्ट समाज के साथ कभी भी जुडी नहीं दिखाई देती। संगीत के क्षेत्र में अलग अलग समाज तथा जाति के कलाकार एकसाथ दिखाई देते है। भारतीय समाज में लोकसंगीत, जनप्रिय संगीत, शास्त्रीय संगीत इन प्रमुख श्रेणियोंके अंतर्गत अलग अलग प्रकार का संगीत उपलब्ध है। इनमेंसे जिस संगीत प्रकार के माध्यम से मनुष्य की भावनिक आवश्यकताओंकी पूर्ती होती है, उसी प्रकार के संगीत का आनंद लेने की उसकी मानसिकता होती है। मनुष्य ने किस प्रकार का संगीत सुनना चाहिए या प्रस्तुत करना चाहिए इसपर भी कोई निर्बंध नहीं

है। बस यह ध्यान में रखना है, कि विशिष्ट प्रकार के संगीत की प्रस्तुती उसके विशिष्ट नियमोंके आधार पर होना अपेक्षित होता है। संगीत में मनोरंजन, आनंदप्राप्ति तथा भावाभिव्यक्ति को हमेंशा ही नियमोंकी अपेक्षा अधिक महत्व दिया जाता है। प्रदर्शन प्रधान कला होने के कारण जिस किसी ने इस कला के कौशल आत्मसात किए है, वह कलाकार कहलाता है। यही कारण है, कि संगीत कभी भी जातियवाद से नहीं जुडा। संगीत समाज के सम्मुख सर्वधर्मसमभाव का आदर्श रखता है। कला के लिए कला इसी एकमात्र उद्देश्श से इस क्षेत्र में कला का प्रदर्शन होता है, जिसके परिणामस्वरूप उच्च नीच, जातिभेद, वर्णभेद आदि को संगीत में स्थान नहीं है। संगीत के सुरों में किसी भी धर्म, जाति, पंथ, तथा भाषा के श्रोताओंकी भावनाओंको केवल नादाकृतियोंके माध्यम से जागृत करने की क्षमता होती है।

भीमगीतोंके सांगितिक अध्ययन में यह बात सामने आती है, की यह रचनाऐं स्थूलरूप में शाहीरी गीत, लोकप्रिय रचनाओंपर आधारित गीत, स्वतंत्र, सरल धुनें, तथा अभिजात संगीत पर आधारित गीत इस प्रकार की होती है। इनमेंसे हर श्रेणि की अपनी विशेषताऐं हैं, तथा उसी के आधार पर उनका श्रोतावर्ग भी निर्धारित है। गीत प्रस्तुतिकरण के उद्देश्श को ध्यान में रखना भी आवश्यक होता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है, कि हर श्रेणिके कलाकारोंके आवाज के गुणधर्म भिन्न होने के कारण उनकी मर्यादाऐं भी भिन्न है। एक ही कलाकार शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, जनप्रिय संगीत, और लोकगीत यह सभी प्रकार उतनीही कुशलता से प्रस्तुत करेंगे ऐसा कहना मुष्किल है।

भीमगीतोंमें अधिकतर गीतोंकी धुनें जनप्रिय संगीत पर आधारित पायी जाती है। उत्स्फूर्तता इन गीतोंका स्थायीभाव होता है। सांगितिक पक्ष से अधिक यह गीत भावनाओंको आवाहन करते है। इस श्रेणि के कलाकारोंका संगीत में प्रशिक्षित हेाना आवश्यक नहीं समझा जाता है। बुलंद आवाज, आत्मविश्वास, श्रध्दा तथा समाजिक

संदेश को संप्रेषित करने की चाह इन गुणोंके आधारपर यह प्रस्तुति होती है। इस श्रेणि के भीमगीतोंमे काव्यरचना अत्यंत सरल हेाती है। अधिकतर भीमगीतोंमें बाबासाहब का गुणवर्णनपर काव्य होता है। किसी फिल्मी गीत पर आधारित धुन सुननेवालोंको तत्काल आकर्षित करती है, और श्रोताओंका ध्यान गीत में निहित संदेश की ओर केंद्रित होता है। गुनगुनानेके लिए आसान होने के कारण ऐसे गीत जनसाधारण में अधिक लोकप्रिय होते है। जनप्रिय संगीत के आकलन के लिए किसी विशिष्ट अनुभव तथा प्रशिक्षण की आवश्यकता ना होने के कारण ऐसे गीतोंको अधिक श्रोतावर्ग प्राप्त होता है और इन गीतोंका प्रचार प्रसार तेजी से होता है ऐसा अनुभव है। दलित समाज के हर एक छोटे मोटे कलाकार की, अपने आराध्य दैवत परमपूज्य बाबासाहब आंबेडकरजी को मानवंदना देने की इच्छापूर्ती इस प्रकार के गीतों द्वारा भलिभाँति पूर्ण होती है।

भीमगीतोंमें आंबेडकरी जलसोंका भी आयोजन होता है। इस लोकप्रिय गीतप्रकार की शुरूवात 1937 में हुई। इसके पहले अठारावी सदी के उत्तरार्ध में महाराष्ट्रमें सत्यशोधक जलसोंके माध्यम से जातीय व्यवस्था पर कडी टीका की जाती थी। संगीत तथा नाटक के सुंदर मिश्रण के रूप में जलसोंकी प्रस्तुति होती है। संपूर्ण रातभर जलसें चलते है। आंबेडकरी जलसोंमें बाबासाहब द्वारा पुरस्कृत तत्वज्ञान तथा उनकी विचारधारा का पुरस्कार शाहिरी अंदाज में किया जाता है। शाहिरी परंपरा महाराष्ट्रकी एक लोकप्रिय लोकपरंपरा है। शाहीरोंद्वारा प्रस्तुत इन जलसोंके माध्यम से बाबासाहब के विचारोंका प्रचार प्रसार महाराष्ट्र के हर छोटे बडे भाग में हुआ। बहुजन समाज को उनके हक के प्रति जागृत करना, यह इन जलसोंका मुख्य उद्देश्श था। शाहीर भीमराव कर्डकजीने आंबेडकरी जलसों का पुरस्कार किया। [4]उनके पुत्र शाहीर वामनदादा

[4] https://www.firstpost.com/long-reads/dalit-shahirs-of-maharashtra-bhimrao-kardaks-jalsa-against-caste-4479325.html

कर्डक जी ने कुल 10000 भीमगीतोंकी रचनाऐं की तथा महाराष्ट्र में उनकी प्रस्तति द्वारा लोकजागरण किया। उनके बाद महाराष्ट्र की शाहीरी परंपरा में आंबेडकरी जलसा करनेवाले कईं शाहिर निर्माण हुए। आज भी शाहीरोंद्वारा आंबेडकरी जलसोंकी प्रस्तुति महाराष्ट्र के गाँव गाँव में होती है। धर्म के नाम पर बहुजन समाज पर थोंपें गए निर्बंधोंपर जलसों के माध्यम से कडा विरोध किया गया। बाबासाहब आंबेडकरजी के विचार घर घर में पँहुंचाने का काम इन जलसोंने किया। इस प्रकार आंबेडकरी जलसा समाजप्रबोधन का एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरा। इन जलसोंका स्वरूप सामूहिक होता है। मंच पर एक मुख्य गायक, चार अथवा पाँच अथवा आवश्यकता के अनुसार झेलकरी, जो मुख्य गायक के साथ सहगायन करते है, लोकवाद्य तथा आधुनिक कालीन संगत के वाद्य बजानेवाले संगतकार इस प्रकार की व्यवस्था होती है। आज इस क्षेत्र में शाहीर विठ्ठल उपम, क्रांतीकवी संभाजी भगत, शाहीर साबळे, शाहीर पाटणकर, शाहीर शीतल साठे, शाहीर प्रा. गणेश चंदनशिवे आदि कलाकार प्रसिध्द है।

आधुनिक युग में सुगम संगीत के माध्यमसे भी भीमगीतोंकी रचनाऐं लोकप्रिय हेाने लगीं है। इनसे पहले भीमगीत केवल समाजप्रबोधन के उद्देश्श से प्रस्तुत होते थे। उपेक्षित समाज पर हुए अत्यांचारोंके प्रति बहुजन समाज को जागृत करने के लिए भावनिक आवाहन के रूप में इन जलसोंका उपयोग होता था। परंतु अभिजात संगीत क्षेत्र के कलाकारोंने भीमगीतोंके स्वरूप में नया परिवर्तन लाया। कुछ कुशल संगीतकारोंने भीमगीतोंके साहित्य को अभिजात संगीत के माध्यम से समाजोन्मुख किया। प्रस्तुतिकरण के इस नए माध्यम से भीमगीतोंको नया मंच तथा श्रोतावर्ग प्राप्त हुआ।[5] इन गीतोंकी निर्मिती के पीछे भीमगीतोंका प्रचार प्रसार, शिष्ठ संगीत के क्षेत्र

[5] Interview with Pt. Bheemrao Panchale, 3rd May 2020.

से भीमगीत प्रस्तुत करनेवाले कलाकार तैयार करना, समाज के सभी स्तरोंमें डॉ. बाबासाहब आंबेडकरजी के विचारोंको संप्रेषित करना, व्यावसायिक स्तर पर इन गीतोंको बढावा देना आदि उद्देश्श थे।

लोक संगीत तथा अभिजात संगीत में महत्वपूर्ण भेद यह है, कि लोकसंगीत लोकसंस्कृति के प्रतिक के रूप में समाज के सम्मुख आता है। इसकी प्रस्तुति असंस्कारित होती है। उत्स्फूर्तता यह लोकगीतोंका स्थायीभाव होता है। इनमें भावनाओकी अभिव्यक्ति को अधिक महत्व दिया जाता है। समाजजीवन का यथार्थ दर्शन हमें इन्ही गीतोंमें मिलता है। इससे विरूध्द शिष्ट संगीत या अभिजात संगीत के सभी प्रकारोंमें सांगितिक नियमों का पालन होना आवश्यक होता है। इनमें कुशलता प्राप्त करनेके लिए कलाकार को विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इनकी प्रस्तुति व्यावयायिक रूप में होने के कारण इनमें वाद्यवृंद की व्यवस्था भी होती है। ऐसे कार्यक्रमोंमें प्रस्तुत होनेवाल भीमगीत अन्य गीतों की तरह ही होते है, जिनमें आंबेडकरजी के जीवन पर आधारित प्रसंगोंके वर्णनपर विषय होते है। इन कार्यक्रमोंमें उपस्थित श्रोता मुख्यतः संगीत के दर्दी होते है, इसी कारण गीतोंके साहित्य के साथ ही उनके सांगितिक पक्ष की ओर भी श्रोताओंका झुकाव रहता है। आज नागपूर, मुंबई, अमरावती, औरंगाबाद आदि दलित आंदोलन के केंद्र रहें सभी शहरोंमें कई प्रतिभावंत संगीत दिग्दर्शक भीमगीतोंकी निर्मिती कर रहें है। भीमगीतोंको संगीत के मुख्य प्रवाह में लाने के लिए यह कलाकार प्रयत्नशील है। इस प्रयास द्वारा भीमगीतोंके प्रचार प्रसार की क्षेत्र विस्तारित हुआ है।

शास्त्रीय संगीत के कलाकारोंद्वारा भीमगीतोंके प्रभावी प्रस्तुतीकरण की प्रथा पुरानी है। 1952 में धारवाड संस्थान के राजगायक तथा शास्त्रीय संगीत के महान कलाकार मा. कृष्णराव फुलंब्रीकरजीने डॉ. बाबासाहब आंबेडकरजी के अनुरोध पर उनके लिखे हुए त्रिशरण पंचशील भूप राग में स्वरबध्द कर उसे ध्वनिमुद्रित किया था। उन्हीं की

आवाज में यह बुध्दवंदना ध्वनिमुद्रित हो ऐसा आंबेडकजी का आग्रह था। स्पष्ट शब्दोच्चार के लिए पंडितजीने सिध्दार्थ कॉलेज में विधिवत पाली भाषा का प्रशिक्षण लिया था ऐसे प्रमाण मिलते है।[6] सामाजिक संदेश संप्रेषित करनेवाली समकालीन भीमगीत की रचनाऐं आज उनके उच्च साहित्यिक तथा सांगितिक घटकोंके आधार पर किसी विशिष्ट लेबल के बिना लोकप्रिय हो रही है। इन रचनाओंका समावेश सार्वकालिक रचनाओंमें हो रही है।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकरजी की 125वी जयंति के अवसर पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय औरंगाबाद द्वारा एक महत्पूर्ण प्रकल्प की शुरूवात की गयी है। इनके द्वारा प्रस्तुत गीत भीमायन के माध्यम से संगीत विभाग प्रमुख डॉ. संजय मोहडजी के निर्देशन में लोकशाहीर वामनदादा कर्डक जी की आंबेडकरजी के जीवनकाल की विविध घटनाओंको दर्शानेवाली 60 कविताओंको संगीतबध्द कर उनके जीवनचरित्र को उजागर किया है। यह सभी गीत शास्त्रीय तथा सुगम संगीत के रूप में संगीतबध्द किए है। युवा पीढी में भीमगीतोंको लोकप्रिय कर भीमगीतोंके नए श्रोतावर्ग की निर्मिती करने का स्तुत्य प्रयास इस प्रकल्प द्वारा किया जा रहा है। शास्त्रीय तथा सुगम संगीत के क्षेत्र के पद्मश्री कविता कृष्णमूर्ती, पद्मश्री हरिहरन, रवींद्र साठे, पं. सुरेश वाडकर, पं. रघुनंदन पणशीकर, विदुषी आरती अंकलीकर, साधना सरगम, मंजुषा पाटील, सावनी शेंडे, बेला शेंडे आदि प्रथितयश कलाकारोंकी आवाज में यह गीत ध्वनिमुद्रित किए गए है। इसप्रकार आधुनिक काल में अभिजन तथा बहुजन समाज के श्रोताओंको जोडने के लिए समकालीन भीमगीतोंका विशेष योगदान मान्य करना ही होगा। [7]

---

[6] बोर्डे उषा, दिव्य मराठी, मे 7, 2020

[7] http://109.73.164.202/~bamuacin/geet-bhimayan/

वैश्विकरण के फलस्वरूप टेक्नॉलॉजी में हुए विकास के माध्यम से संचार माध्यमों के रूप में हमें कला के प्रचार प्रसार के लिए बडी उपलब्धि प्राप्त हुई है। शुरूआती दौर में मौखिक रूप में समाज में संक्रमित होनेवाले भीमगीत अब दुनिया के हर कोने में लोकप्रिय हो रहें है। इनमें फिल्मी गानोंकी धुनोंपर आधारित गीतोंसे लेकर अभिजात संगीत तथा फयूजन संगीत पर आधारित गीतोंका भी समावेश है। कईं कलाकार इन भीमगीतोंके माध्यम से अपनी पहचान बनाने मे सफल हो रहें है। देशविदेशोंमें विविध अवसरोंपर आयोजित कार्यक्रमोंमें भीमगीतोंकी प्रस्तति हो रही है। व्यावयायिक दृष्टिकोण से आजिविका प्राप्ति हेतु भीमगीत प्रस्तुत करनेवाले कलाकारोंकी संख्या बढ रही है।

निष्कर्ष

लोकप्रिय संगीत पर आधारित भीमगीत हो, चाहे समकालीन प्रवाहोंद्वारा अभिजात संगीत के माध्यम से व्यावसायिक स्तर पर प्रस्तुत होनेवाले भीमगीत, दोनों के अभ्यास के उपरांत एक बात स्पष्ट होती है, कि आधुनिक युग में भीमगीतोंकी प्रस्तुति के संदर्भ बदल रहें है। इन बदलते संदर्भोंके अनुसार उनके उद्देश्श में भी परिवर्तन हो रहे है। संगीत के प्रमुख प्रवाह में समाविष्ट हेाने के प्रयास में भीमगीतोंके पारंपारिक कलाकारोंद्वारा भी शिष्ट संगीत की आवश्यकताओंको समझकर उन्हे आत्मसात करने का प्रयास हो रहा है। उसी तरह व्यावयायिक क्षेत्र के कलाकारोंद्वारा भी भीमगीतोंकी प्रस्तुति हो रही है। नयी पीढी को आधुनिक भीमगीतोंके माध्यम से शिष्ट संगीत से परिचित कराना तथा शिष्ट संगीत के श्रोताओंको भीमगीतोंका परिचय कराना यह दोहरा कार्य भीमगीतोंके माध्यम से हो रहा है। युवा पीढी की सांगितिक प्रतिभा उजागर हो रहीं है। भीमगीतोंका प्रचार प्रसार विशिष्ट वर्ग तक सीमित ना रहकर इन रचनाओंको सार्वभौमिक स्तर पर मान्यता प्राप्त हो रहीं है। इन गीतोंमें निहीत सांगितिक सौंदर्य

की पहचान वैश्विक स्तर पर हो रहीं हैं। इन प्रयासोंद्वारा यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है, कि भीमगीतोंके रूपमें दलित समाज की सांस्कृतिक विरासत आधिक समृध्द स्वरूप में आनेवाली पीढी को हस्तांतरित होगी इसमें कोई आशंका नहीं है।

.....